राजकीय महाविद्यालय, पचवस, बस्ती (उ.प्र.)

ई-कंटेंट मॉड्यूल (E-Content Module) - 2

Course :- B.A. First Year , 1st Paper
University :- Siddharth University, Kapilvastu, Siddharthnagar (U.P.)
Subject :- Ancient History
Unit :– 5.1
Topic :- गुप्त साम्राज्य का इतिहास (History of Guptas)
Prepared by :- Dr. Vijay Kumar
Designation:- Assistant Professor (Ancient History)
Institution:- Government Degree College, Pachwas, Basti (U.P.)
Date of Preparation: Jan. 2022

गुप्त साम्राज्य का इतिहास (History of Guptas)

अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस मॉड्यूल के अध्ययन के बाद विद्यार्थी :-
1. गुप्त वंश के उदय एवं विस्तार को समझ सकेंगे।
2. प्रमुख शासकों जैसे चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त एवं चंद्रगुप्त द्वितीय की उपलब्धियों का विश्लेषण कर सकेंगे।
3. गुप्तकालीन प्रशासन, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति का मूल्यांकन कर सकेंगे ।
4. गुप्त काल को "स्वर्ण युग" कहे जाने के कारणों को समझ सकेंगे।

प्रस्तावना :- गुप्त साम्राज्य का उद्भव उत्तर भारत में कुषाण साम्राज्य के पतन के पश्चात हुआ। गुप्त वंश का आरंभिक राज्य उत्तर प्रदेश और बिहार में था। गुप्त काल को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहा जाता था। इस समय भारत में राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक उन्नति मुख्य रूप से अपने चरम पर थी। गुप्त राजवंश का इतिहास साहित्य एवं पुरातात्विक दोनों स्रोतो से ज्ञात होता है। विशाखादत्त कृत 'देवीचंद्रगुप्तम' नाटक से गुप्त वंशी नरेश रामगुप्त एवं चंद्रगुप्त द्वितीय के विषय में सूचना प्राप्त होती है तथा शूद्रककृत 'मृच्छकटिक' एवं वात्स्यायन के 'कामसूत्र' से भी गुप्तकालीन शासन व्यवस्था एवं नगर जीवन के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। इसके साथ ही विदेशी यात्रियों का विवरण भी गुप्त इतिहास को जानने में सहायता करता है, जिम चीनी यात्री फाहियां गुप्त नरेश चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत आया था। चंद्रगोमिन के व्याकरण नामक ग्रंथ में गुप्तों का जार्ट (जाट) कहा गया है। चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्ता ने अपने पूना ताम्रपत्र में उल्लेख किया है कि गुप्त वंशीय लोग धारण गोत्र के थे। गुप्त काल के अनेक अभिलेखों से गुप्त काल को जानने के स्रोत प्राप्त होते हैं जिनमें मुख्य रूप से समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख, कुमार गुप्त का विलसड स्तंभ लेख एवं स्कंदगुप्त का भीतरी स्तंभ लेख हैं। गुप्त वंशीय अनेक सिक्के भी प्राप्त हुए हैं जो मुख्यतः स्वर्ण,रजत तथा तांबे के हैं। स्वर्ण सिक्कों को 'दीनार', रजत सिक्कों को 'रूपक या रुप्यक तथा ताम्र सिक्कों को 'माषक' कहा जाता था। समुद्रगुप्त के अश्वमेघ सिक्कों से अश्वमेध यज्ञ की सूचना प्राप्त होती है।

विषय वस्तु :- गुप्त साम्राज्य का आदि पुरुष श्रीगुप्त था। उनके उत्तराधिकारी व पुत्र घटोत्कच थे। प्रभावती गुप्त के ताम्रपत्र अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि श्री गुप्त, गुप्त वंश का संस्थापक था। परंतु गुप्त वंशीय प्रथम शासक चंद्रगुप्त प्रथम को माना जाता है उन्होंने 'महाराजाधिराज' की उपाधि ग्रहण की थी। प्राप्त अभिलेखों तथा साक्ष्यों के आधा पर गुप्तों के आदि पुरुष का नाम घटोत्कच के उत्तराधिकारी चंद्रगुप्त प्रथम (319-335 ई०) एक सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। चंद्रगुप्त प्रथम ने ही गुप्त वंश के इतिहास में एक नए संवत "गुप्त संवत" को चलाने का श्रेय दिया जाता है। चंद्रगुप्त प्रथम ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि ग्रहण की थी। मुद्रा साक्ष्यों से यह ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह कर लिच्छवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध को स्थापित किया था। सर्वप्रथम चंद्रगुप्त प्रथम ने ही रजत (चांदी) की मुद्राओं का प्रचलन करवाया था। चंद्रगुप्त प्रथम के पश्चात उसका पुत्र समुद्रगुप्त (335-375 ई०) गुप्त साम्राज्य की गद्दी पर आसीन हुआ। समुद्रगुप्त का दरबारी कवि हरिषेण के प्रयाग प्रशस्ति में उसके समस्त विजयों का विवरण मिलता है। समुद्रगुप्त द्वारा विजित स्थान हैं - गंगा यमुना दोआब के राजाओं को पराजित कर उनके राज्य को अपने गुप्त साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। पूर्वी हिमालय के राजाओं और कुछ सीमावर्ती राजाओं के शासक शामिल है। समुद्रगुप्त ने आटविक राज्य जो विंध्य क्षेत्र में आते हैं उन्हें भी विजित किया एवं पूर्वी दक्कन और दक्षिणापथ के बारह शासकों परास्त किया। दक्षिणापथ विजय की तीन प्रमुख नीतियां थी - ग्रहण, मोक्ष, अनुग्रह। समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत के नौ शासको को परास्त किया, पराजित राजाओं में अच्युत, नागसेन तथा गणपतिनाग प्रमुख थे। राय चौधरी ने समुद्रगुप्त की दक्षिणपथ विजय को 'धर्मविजय' की संज्ञा दी है। गणतंत्र राज्यों ने सर्वकरदान, आज्ञाकरण एवं प्राणामागमन के द्वारा समुन्द्रगुप्त के शासन प्रणाली को संतुष्ट करने की चेष्टा की। आत्म निवेदन, कन्योपायन, गुरुत्मदंक द्वारा शक कुषाण तथा मुरुंड शासकों ने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार करने के लिए यह तीन विधियां अपनाई।

. समुद्रगुप्त के समकालीन लंका नरेश मेघवर्ण ने उन्हें उपहार सहित एक दूत मंडल भेजकर

गया में मठ बनाने की अनुमति मांगी थी।अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है की समुद्रगुप्त ने अपनी विजय के पश्चात अश्वमेघ यज्ञ करवाया था। उसके सिक्कों पर मुद्रित अप्रतिरथ, व्याघ्रपराक्रमांक, पराक्रमांक जैसे विसद उसके गौरवपूर्ण जीवन को स्पष्ट करते हैं। प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख के अनुसार समुद्रगुप्त की दिग्विजय का उद्देश्य 'धरणिबंध' था। उसकी उत्तरी भारत की नीति को "प्रसभोद्धरण" तथा दक्षिणापथ नीति को "ग्रहण मोक्षानुग्रह" कहते हैं। विंसेंट स्मिथ महोदय ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा है। समुद्रगुप्त एक महान शासक के साथ ही एक अच्छा कवि, संगीतज्ञ और विद्या का संरक्षक था।उसके सिक्कों पर उसे वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया है तथा कविराज की उपाधि प्रदान की गई है। प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख में समुद्रगुप्त को "धर्म प्रचार बंधु" उपाधि प्रदान की गयी है। समुद्रगुप्त ने महान बौद्ध भिक्षु वसुबंधु को संरक्षण दिया था।समुद्रगुप्त के पश्चात राम गुप्त, गुप्त साम्राज्य का शासक बना किंतु यह एक दुर्बल शासक था। विशाखदत्त कृत 'देवीचंद्रगुप्त' के अनुसार रामगुप्त ने शक शासकों के समक्ष समर्पण कर दिया।

. चंद्रगुप्त द्वितीय, समुद्रगुप्त का कनिष्ठ पुत्र था जिसने रामगुप्त को पराजित कर गुप्त साम्राज्य की गद्दी पर आसीन हुआ, इसने शकों को भी परास्त किया। चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य उत्कर्ष के शीर्ष पर पहुंचा। उसने वैवाहिक संबंधों और विजय दोनों के सहारे से साम्राज्य की सीमा का विस्तार किया। चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी कन्या प्रभावती का विवाह ब्राह्मण कुल के वाकाटक शासक रूद्रसेन द्वितीय से कराया। चंद्रगुप्त द्वितीय के अन्य नाम थे, जिनमें देवगुप्त, देवराज, देवश्री तथा चंद्रगुप्त द्वितीय ने कई उपाधियां भी धारण की, जिनमें विक्रमांक, विक्रमादित्य, परमभागवत आदि था। चंद्रगुप्त द्वितीय ने शक मुद्राओं के तरह ही चांदी के सिक्के का प्रचलन करवाया।पश्चिमी शक विजय के पश्चात उसने व्याघ्र सिक्के उत्कीर्ण कराये तथा विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। भारतीय अनुश्रुतियाँ उसे शकारि के रूप में स्मरण करती है। चंद्रगुप्त द्वितीय उदयगिरि गुहा लेख से उसके दिग्विजयों का उल्लेख मिलता है। चंद्रगुप्त द्वितीय के काल में पाटलिपुत्र एवं उज्जैयिनी विद्या के प्रमुख केंद्र थे। चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल को युद्धों के कारण स्मरण नहीं करते अपितु कला और साहित्य के प्रति उसके अपार प्रेम के कारण करते हैं। अनुश्रुतियों के अनुसार उसके दरबार में नौ विद्वानों की एक मंडली थी जिन्हें नवरत्न कहा जाता था, जिनमें कालिदास, धनवन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेताल भट्ट, घटकर्पर, वाराहमिहिर, वररुचि जैसे विद्वान थे।

. चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में चीनी यात्री फाह्यान (399- 414 ई०) भारत आया, उसने अपनी यात्रा वृतांत में मध्य प्रदेश को ब्राह्मणों का देश कहा है। पाटलिपुत्र से ही फाह्यान ने वापसी यात्रा आरंभ की। उसने अपनी पूरी यात्रा विवरण के सन्दर्भ में कहीं भी सम्राट शब्द का उल्लेख नहीं किया। चंद्रगुप्त द्वितीय का काल ब्राह्मण धर्म के चरमोत्कर्ष का कल था। चंद्रगुप्त द्वितीय के उपरांत गुप्त साम्राज्य का शासक कुमारगुप्त बना परंतु कुमारगुप्त से पूर्व रामगुप्त की पत्नी ध्रुवदेवी का पुत्र गोविंद गुप्त भी शासक बना परंतु यहां एक विवादास्पद विषय है।कुमारगुप्त (415-454 ई०) के शासन की प्रथम तिथि विलसड़ अभिलेख से ज्ञात होता है तथा अंतिम तिथि चांदी के सिक्कों से मिलता है। कुमारगुप्त के शासन प्रणाली का वर्णन वत्सभट्टि द्वारा कृत मंदसौर प्रशस्ति अभिलेख से प्राप्त होता है। गुप्त शासन में सर्वाधिक अभिलेख कुमार गुप्त के मिलते हैं। मध्य भारत में रजत सिक्कों का प्रचलन भी कुमार गुप्त के शासनकाल में ही प्रचलित हुआ। इन मुद्राओं पर गरुण के स्थान पर मयूर की आकृति उत्कीर्ण की गई है। कुमार गुप्त के सिक्कों से यह स्पष्ट होता है कि उसने अश्वमेघ यज्ञ किया था।

.   स्कंदगुप्त के अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि कुमार गुप्त के अंतिम दिनों में पुष्यमित्रों का आक्रमण हुआ, इसे निपटने के लिए उसने अपने पुत्र स्कन्दगुप्त को भेजा और उसने अन्ततः पुष्यमित्रों को पराजित कर दिया। कुमार गुप्त के शासनकाल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, इस विश्वविद्यालय को ऑक्सफोर्ड आफ महायान बौद्ध कहा जाता है। कुमारगुप्त ने अनेक उपाधियां धारण की जिनमें महेंद्रादित्य ,श्रीमहेंद्र तथा अश्वमेध महेंद्र थी। कुमारगुप्त के पश्चात उसका पुत्र स्कंद गुप्त, गुप्त साम्राज्य का शासक बना। उसके शासनकाल में हुणों का आक्रमण हुआ। जूनागढ़ अभिलेख तथा चंद्रगर्भ परिपृच्छ में स्कंद गुप्त के हुणों तथा विदेशियों पर विजय प्राप्त करने का प्रमाण मिलता है। चंद्रगुप्त मौर्य ने गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था। अशोक तथा रुद्रदामन ने उसकी मरम्मत कराई थी, स्कंदगुप्त ने सुदर्शन झील का पुनरुद्धार कराया। यह पुनरुद्धार का कार्य सौराष्ट्र के गवर्नर पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित को सौंपा गया, उसने झील के किनारे एक विष्णु मंदिर का निर्माण भी करवाया । स्कंदगुप्त को कहौम स्तंभ लेख 'शक्रादित्य' आर्यमंजुश्री मूलकल्प में 'देवराय' तथा जूनागढ़ अभिलेख में 'श्री परीक्षिप्त्वक्षा' कहा गया है।

स्कंदगुप्त ने चीनी सॉन्ग सम्राट के दरबार में राजदूत भेजे थे। इससे उसके चीन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध ज्ञात होते है।स्कंदगुप्त के उत्तराधिकारियों में बुद्धगुप्त भी था, जो एक शक्तिशाली शासक था। प्रशासनिक सुविधा के लिए स्कंदगुप्त ने अपनी राजधानी को अयोध्या स्थानांतरित किया।गुप्तों के पतन के कारणों में हूणों का आक्रमण एक मुख्य कारण रहा है। धन्यविष्णु के एरण अभिलेख में तोरमाण का उल्लेख मिलता है जो हूणों का प्रथम शासक था। कुवलयमाला नामक जैनग्रन्थ में तोरमाण ने चन्द्रभागा नदी के तट पर पब्बैया नामक स्थान पर शासन करने का उल्लेख मिलता है। मंदसौर अभिलेख के अनुसार मालवा शासक यशोधर्मन ने मिहिरकुल को परास्त कर उत्तर भारत में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के कारण विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया।

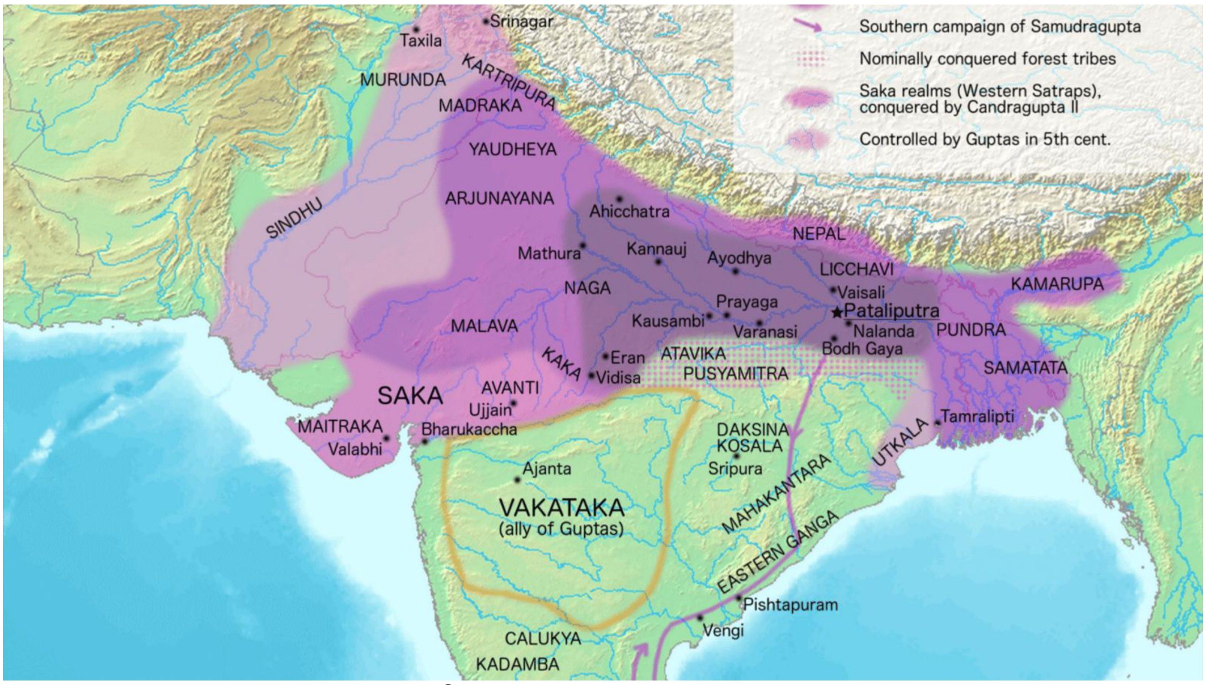

चित्र :- 1. गुप्त साम्राज्य

मौर्य के विपरीत गुप्त राज्यों ने महाराजाधिराज,परमभट्टकर जैसी उपाधियों धारण की थी। गुप्त साम्राज्य में राज्य पद वंशानुगत थे, परंतु राजसत्ता जेष्ठाधिकार की अटल प्रथा के अभाव में थी। गुप्त कालों में आश्वचलित रथ की लोकप्रियता कम होकर घुड़सावारों की महत्ता बढ़ गई। गुप्त काल में सेवा के सर्वोच्च अधिकारी महाबलाधिकृत कहलाता था। वाण ने दैवी उत्पत्ति के सिद्धांत को स्पष्ट रूप से नकार दिया। राजा को रक्षा और पालन करने वाला भगवान विष्णु माना जाने लगा तथा राजसत्ता की देवी को लक्ष्मी के रूप में मानकर सिक्कों पर सदा के लिए अंकित कर दिया गया। गुप्त काल में ग्रामवासियों से सरकारी सेवा और अधिकारियों की सेवा के लिए बेगार लिया जाता था, जो विशिष्ट कहलाता था। अभिलेखों के प्रमाण स्वरूप यशोधर्मन का अभिलेख प्रस्तुत किया गया जहां शासक को चारों वर्णों के हितों का रक्षक माना जाता है। गुप्त साम्राज्य के सबसे बड़े अधिकारी कुमारामात्य होते थे।

राज्यों को शासकीय सुविधा के लिए विभिन्न प्रांतो में विभाजित किया जाता था जिन्हें भुक्ति कहा जाता था। इन्हें प्रदेश या भोग भी कहते थे। प्रांतीय शासकों की नियुक्ति सम्राट करते थें जिन्हें उपरिक, गोप्ता, भोगपति तथा राजस्थानीय कहते थे। सीमांत प्रदेशों के शासक को गोप्ता कहते थे। विषयपति की नियुक्ति उपरिक करते थे। विषयपति का प्रधान कार्यालय अधिष्ठान कहलाता था। प्रत्येक राज्य के अंतर्गत कई ग्राम होते थे। दंडनायक, महादंडनायक, सर्वदंड नायक नमक न्यायाधीश रहते थे। गुप्तचर कर्मचारियों को दूत भाट कहा जाता था। मध्य भारत में ग्राम सभा को पंचमंडली कहा जाता था। नगर परिषद के प्रमुख को नगरपति कहा जाता था। करों की वसूली हिरण्य (नगद)तथा मेय (अन्न)मे की जाती थी। गुप्तकालीन समाज परंपरागत रूप से चार वर्णों में विभाजित था। गुप्त साम्राज्य से पूर्व विदेशी लोग विजेता के रूप में भारत आये जिन्हें क्षत्रिय का स्थान मिला। गुप्त काल में दास प्रथा का विधान था। शूद्र कृष्ण नामक देवता की पूजा करते थे। जनजातीय सरदार लोग उच्च कुल के माने जाते थे। भूमि और राजस्व के स्थानांतरण के कारण यह जाति अस्तित्व में आई। गुप्त काल में वाणिज्य को शूद्रों का कर्तव्य माना जाता था। मछली मारने, शिकार करने और मांस बेचने का कार्य चांडाल लोग ही करते थे।

कायस्थ का सर्वप्रथम उल्लेख याज्ञवल्क्य ने किया है। ब्राह्मण पिता और शूद्र स्त्री से उत्पन्न संतान को मनु द्वारा पाराशव जाति का बताया गया है। गुप्त काल के धर्म शास्त्रों में शूद्र को अस्पर्शियों और दसों से अलग बताया गया है।गुप्त काल के अधिकतर लोग शाकाहारी थे परंतु मांसाहार भी प्रचलित था। गुप्त काल में दसों की अवस्था पूर्व कल से अधिक दयनीय थी। इस काल में सती प्रथा सिर्फ सैनिक जातियों में विद्यमान थी। विधवाओं की स्थिति अत्यंत सोचनीय थी। स्त्रियों की संपत्ति संबंधी अधिकारों के विषय में याज्ञवल्क्य स्मृति में मान्यताएं दी गई है। गुप्तकालीन शासक आर्थिक दृष्टि से समृद्धि एवं संपन्नता से परिपूर्ण थे। इस काल में कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था। वृहदसंहिता के अनुसार तीन फसलों का उल्लेख मिलता है जिनमें चावल और जौ प्रमुख फैसले थी, परंतु कालिदास ने ईख तथा धन की खेती का भी उल्लेख किया है। सिंचाई की सर्वोत्तम उदाहरण स्कंद गुप्त का जूनागढ़ अभिलेख है। कपड़े का निर्माण गुप्त काल का प्रमुख उद्योग था। गुप्त शासको ने सबसे अधिक स्वर्ण मुद्राएं जारी की जिन्हें अभिलेखों में दीनार कहा जाता था। गुप्त काल में नालंदा, वैशाली आदि स्थानों पर मुहरें शिल्पियों के संघठनात्मक गतिविधियां प्रदर्शित होती हैं। मंदसौर अभिलेख से ज्ञात होता है कि रेशम बुनकरों की श्रेणी ने एक भव्य सूर्य मंदिर का निर्माण किया। तक्षशिला, कौशांबी, विदिशा नामक स्थान पर लोगों द्वारा स्वयं मुद्रायें जारी की जाती थी।

गुप्तकालीन आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए मुद्रा साक्ष्य एक प्रमुख स्रोत है। चांदी के सिक्कों का प्रयोग स्थानीय लेन-देन में किया जाता था। व्यापारियों की एक समिति होती थी, जिसे निगम कहा जाता था। निगम के प्रधान को श्रेष्ठि कहा जाता था। गुप्त काल में भारत तथा पाश्चात्य विश्व के बीच व्यापारिक संबंधों में गिरावट आ गई। इसका प्रमाण कुमारगुप्त प्रथम कालीन मंदसौर अभिलेख से मिलता है। विदेशों को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मसला था। गुप्तकाल मे स्त्रियों की शिक्षा का प्रचलन था, अमरकोष में शिक्षिकाओं के लिए उपाध्याया, उपाध्यायीय और आचार्या शब्द आते हैं। नारद एवं पराशर स्मृति से विधवा विवाह का समर्थन मिलता है। गुप्तकालीन अभिलेख जिनमें ओशनम स्मृति में कायस्थ नामक जाति का उल्लेख मिलता है। फाह्यान के अनुसार आम नागरिकों को विनिमय के लिए वस्तुओं की अदला बदली अथवा कौड़ियों से कम चलना पड़ता था। गुप्त काल में ताम्रलिप्ति प्रमुख बंदरगाह कहा था, जहां से चीन, लंका, जावा, सुमात्रा देश से व्यापार होता था। पश्चिमी भारत का प्रमुख बंदरगाह भृगुकच्छ था। गुप्त काल ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान का काल माना जाता है। अनेक गुप्त शासको ने अश्वमेध, अग्निष्टोम, वाजपेय, वाजसनेय आदि यज्ञ करवाएं। गुप्त राजाओं में वैष्णव धर्म की लोकप्रियता अपने चरण पर पहुंच गई। चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपने मुद्राओं पर परम भागवत विशेषण का प्रयोग किया है।

चित्र :- 2. गुप्तकालीन सिक्के

चंद्रगुप्त द्वितीय तथा समुद्रगुप्त के मुद्राओं पर विष्णु के वाहन गरुड़ की प्रतिमा मुद्रित है। गुप्त काल में वैष्णव धर्म संबंधी महत्वपूर्ण अवशेष देवगढ़ का दशावतार मंदिर है। गुप्त काल में नारायण, संकर्षण, लक्ष्मी जैसे देवी देवताओं को वैष्णव धर्म में सम्मिलित किया गया है। गुप्त काल में बौद्ध धर्म का विस्तार काम हुआ। नारायण मूलतः अवैदिक जनजातीय देवता थे। वह भगवत् कहलाता थे और उनके उपासक को भागवत

कहते थे। गुप्त काल में त्रिमूर्ति ब्रह्मा विष्णु और महेश की पूजा आरंभ हुई। स्कंद गुप्त ने बैल के आकार के सिक्का का प्रचलन करवाया। गुप्त काल में दैवी शक्ति का वैभव बढ़ गया। गुप्त काल में नालंदा में प्रसिद्ध बौद्ध विहार की स्थापना हुई थी। इस काल में महायान संप्रदाय अधिक लोकप्रिय रहा। योगाचार दर्शन का गुप्त काल में अत्यधिक विकास हुआ।कहौम अभिलेख के अनुसार स्कंदगुप्त के काल में भद्र नामक एक व्यक्ति ने पांच जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों को स्थापित करवाया था। कला और साहित्य के विकास की दृष्टि से गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है।

गुप्त काल में मंदिर निर्माण कला का जन्म हुआ था। गुप्त काल में ही गंगा यमुना की मूर्ति रूप को जन्म दिया गया। गुप्त काल से ही पहली बार विष्णु,शिव तथा अन्य देवी देवताओं की प्रतिमा मिलनी प्रारंभ हुई। गुप्त काल में उदयगिरि की गुफा मंदिर का निर्माण चंद्रगुप्त द्वितीय के सेनापति वीर सेन ने कराया था। इस मंदिर में विष्णु के वराह अवतार की मूर्ति स्थापित है। गुप्त काल को विज्ञान के क्षेत्र में आर्यभट्ट द्वारा शून्य के सिद्धांत तथा दशमलव प्रणाली के विकास का श्रेय मिलता है । गुप्त काल में मूर्ति के सर्वोत्तम उदाहरण सारनाथ की मूर्तियां और चित्रकला के सर्वप्रमुख उदाहरण अजंता बौद्ध कला के उदाहरण है। चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार में आयुर्वेद का विद्वान और चिकित्सक धन्वंतरि था। इस काल का सर्वाधिक भव्य अवशेष दिल्ली का सुप्रसिद्ध लोह स्तंभ को माना जाता है । गुप्त काल भारतीय संस्कृति में एक नक्षत्र की भांति रहा है। इस युग में भारतीय सभ्यता और संस्कृति अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गई थी। चीनी यात्री फाह्यान के विवरण तत्कालीन गुप्त युगीन सामाजिक दशा का वर्णन करते हैं। इन शासको ने अपने शासनकाल में कला और साहित्य को संरक्षण प्रदान किया था। गुप्त शासको के समय में समाज का विभाजन वर्ण व्यवस्था ही था गुप्त युग में अंतर्जातिय विवाह भी होते थे। उच्च वर्ग के पुरुषों का निम्न वर्ग की स्त्री से विवाह कर लेना अनुलोम विवाह कहलाता था और उच्च वर्ग की स्त्री का निम्न वर्ग के पुरुष से विवाह कर लेना प्रतिलोम विवाह कहलाता था। गुप्त काल में दास प्रथा प्रचलित थी। यह प्रथम भारतीय समाज में गुप्तों के पूर्व भी थी।

गुप्त काल में स्त्री शिक्षा का भी प्रचलन था। स्त्रियों की शिक्षा के लिए अमरकोष में वैदिक मन्त्रों का वर्णन आया है। शोलभट्टारिका एक विद्वान महिला थी। गुप्तकालीन समाज में पर्दे की प्रथा ना थी। गुप्त काल में विधवा विवाह का प्रचलन था, परंतु अनेक स्थानों पर उसके विरोध भी मिलते हैं। गुप्तकालीन समाज में गणिकाएँ विद्यमान थी। गुप्त काल के साहित्यिक विवरण एवं प्राप्त कलाकृतियां से इस युग के वस्त्रों एवं आभूषणों के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है । फाहियां के अनुसार गुप्तकालीन समाज में ऊनी और रश्मि वस्त्रो का व्यापार होता था रेशम का कपड़ा भारत से चीन आता था और और उसे चीनांशुक कहते थे। स्त्री और पुरुष दोनों ही आभूषण धारण करते थे। उन समय के नागरिकों का साधारण भोजन दाल, चावल, रोटी, बाजरा, मिठाई, घी, और शक्कर था।

गुप्त काल के नागरिक आमोद प्रमोद के लिए समय-समय पर विभिन्न प्रकार के उत्सव को मानते थे। फाह्यान ने पाटलिपुत्र वर्णन में लिखा है कि प्रतिवर्ष दूसरे माह की आठवीं तिथि को रथ यात्रा होती थी। चार पहिए के रथ बनते थे और सजाया जाता था। बीच में बुद्धदेव की मूर्ति और पास में बोधिसत्व खड़ा किया जाता था। पूजा पाठ आदि करते थे। राजा एवं क्षत्रिय वर्ग के लोग मनोरंजन के लिए शिकार खेलते थे और आखेट पर जाते थे। उत्सव के अवसर पर महिला एकत्रित होकर अनेक प्रकार के शारीरिक खेल खेलती थी । नाटक, प्रहसन, तमाशा, मेले आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम की सामग्री उपस्थित होती थी। गुप्त काल में जनता का नैतिक स्तर अत्यंत उच्च था। फाहियान ने उनकी अतिथि संस्कार आदि गुना की प्रशंसा की है। वैष्णव धर्म के साथ-साथ

शैव धर्म भी प्राप्त प्रचलित था। विष्णु तथा शिव की पूजा के साथ ही सूर्य पूजा का भी महत्व था । गुप्त युग में बौद्ध धर्म भी प्रचलित था। गुप्त युग में जितनी भगवान बुद्ध की मूर्तियां बनी उतनी संभवत किसी की निर्मित नहीं हुई। गुप्त युग में कहीं-कहीं शक्ति पूजा का भी संकेत मिलता है । गुप्त युग में नागार्जुनीकोंडा नामक एक अति समृद्ध बौद्ध विहार था जिसमें बौद्ध भिक्षु निवास करते थे। बोधिसत्व की पूजा का भी प्रचार हुआ। गुप्त युग में जैन धर्म को भी उन्नति और विकास का अवसर प्राप्त हुआ। इसमें दो संप्रदाय थे- दिगंबर तथा श्वेतांबर। इस काल में कई जैन मूर्तियां का भी निर्माण हुआ ।गुप्त युग धार्मिक संकीर्णताका युग ना था। सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य वैष्णव धर्म का अनुयायी था। परंतु गुप्तकालीन शासक सभी धर्म को आदर सत्कार प्रदान किया। इस प्रकार गुप्तकालीन शासको में धार्मिक सहित श्रोता देखने को मिलती है।

गुप्त काल की आर्थिक दशा अत्यंत संपन्न थी। कृषि उद्योग एवं व्यापार ने इस अपूर्व उन्नति दी थी। गुप्त काल का नागरिकों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। देश में गेहूं, जो, चावल, ज्वार, बाजरा, दाले, तिलहन आदि की फैसले उत्पन्न की जाती थी। गुप्त काल में कृषि की सिंचाई की समुचित व्यवस्था थी। नहरों, तालाब और कुआं द्वारा सिंचाई की जाती थी। स्कंदगुप्त के शासनकाल में सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार हुआ था। गुप्त युग में कृषि के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के उद्योग एवं व्यवसाय भी प्रचलित थे। वस्त्र व्यवसाय एक प्रमुख व्यवसाय था। ऊनी,सूती तथा रेशमी तीनों प्रकार के वस्त्र बहुत महीन बुने जाते थे। आभूषणों का भी प्राप्त प्रचलन था। गुप्त युग में पोत निर्माण कला ने भी अपूर्व प्रगति की। इस काल में व्यापार बहुत अच्छा था। वराहमिहिर ने उल्लेखित है कि भारत में समुद्र से मोती निकलना भी एक राष्ट्रीय व्यवसाय था। इस काल में लौह व्यवसाय भी बहुत अच्छा था। गुप्त युग में व्यावसायिक श्रेणियों में संगठित थे। जुलाहे तेली आदि विविध व्यवसाय अपनी-अपनी श्रेणी में संगठित थे।

गुप्त काल में व्यापार बहुत ही अधिक समृद्ध था। इस कल के प्रमुख व्यापारिक नगर वैशाली, उज्जैनी, दशपुर तथा भड़ौच आदि थे। व्यापार जल एवं स्थल दोनों माध्यमों से होता था। गुप्तों के सिक्के को दिनर कहा जाता था। जावा, कंबोडिया, व स्याम आदि देशों से भारत का गुप्त काल में अत्यधिक व्यापार होता था। इस प्रकार गुप्तकालीन युग व्यापार की दृष्टि से अत्यधिक उन्नत था और आर्थिक दशा भी बहुत अच्छी थी । गुप्त शासन केंद्र एवं प्रति में सुव्यवस्थित था । गुप्त कालीन शासन प्रणाली राजतंत्रात्मक थी। साम्राज्य का प्रधान अधिकारी राजा होता था और उसकी शक्तियां एवं अधिकार अत्यंत विस्तृत होते थे । वह उच्च पदों के अधिकारियों की नियुक्ति करता था। गुप्त नरेशों ने महाराजाधिराज, परमेश्वर, सम्राट, परमदेवता आदि उपाधि धारण की। राजा की प्रशासन व्यवस्था में सहायता देने के लिए मंत्रिपरिषद होती थी फिर भी इसकी बागडोर राजा के हाथों में थी। वह राज्य के सभी कार्यों पर अपनी निगरानी रखता था। राजा के मंत्रियों की संख्या निश्चित नहीं होती थी। शासन का प्रत्येक विभाग एक-एक मंत्री के अधीन था।

```
सम्राट  (केंद्रीय  शक्ति)
                                         ↓
                         - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -
                          /            |            |          \
                  प्रांत  (भुक्ति)    |     सेना       कर  व्यवस्था
                          ↓            |            ↓
                     जिल्ला  (विषय)     |     व्यापार  वृद्धि
                          ↓
                      गांव  (ग्राम)
```

चित्र :- 3. केंद्रीय गुप्त प्रशासन

मंत्रिमंडल के अधिवेशन में प्रधान का आसान राजा ग्रहण करता था। मंत्री राजा को सिर्फ सलाह दे सकता था। सर्वाध्यक्ष का पद सत्र विभागों के निरीक्षक का होता था। इस पद पर सिर्फ उच्च वंशीय लोग ही आसीन होते थे। कोषाध्यक्ष को भाण्डागाराधिकृत कहा जाता था। सेना के सबसे बड़े अधिकारी को महासेनापति कहा जाता था।महासेनापति के अधीन कई दंडनायक होते थे। दूत अन्य राज्यों व देशों में जाकर राजदूत का कार्य करते थे। शाल्लिक का कार्य कर लेने का था। इस प्रकार गुप्त साम्राज्य में कई अधिकारियों के कार्य विभाजित थे। शासन प्रबंध को संचालित करने के लिए गुप्त साम्राज्य राष्ट्र, भुक्ति, विषय, नगर व ग्राम में विभक्त था। भुक्ति का शासक उपरिक होता था। विषय का शासक विषय पति कहलाता था। कार्य में सहायता देने के लिए एक सभा होती थी। हीरो का शासन पुरपाल नामक कर्मचारी के अधीन होता था। गुप्त सम्राट कला और साहित्य का भी संरक्षण करते थे। इस काल में राजा का प्रधान धर्म लोक कल्याण होता था।गुप्त काल मे राजकीय आय का प्रमुख भूमिकार था, उपज का छठा भाग भूमि करके रूप में लिया जाता था। फरीदपुर के ताम्रपत्र में उल्लेखित है की भूमि कर के लिए भागकर एवं उद्रक या उद्रग नाम मिलते हैं। यहां कर अधिकतर अनाज के रूप में वसूल किया जाता था। दूसरा कर भूतोवात प्रत्याय था। यह व्यापारिक तथा मादक वस्तुओं पर लगाया जाता था। इसके अतिरिक्त गुप्तकालीन लेखो में उपरिकर एवं विष्टी का भी उल्लेख मिलता है।

गुप्त काल में राजकीय आय का साधन सामयिक कर था। वनों खानों चारागाह हो आदि पर भी कर लगाया जाता था। युद्ध के समय विशेष कर लगते थे इस प्रकार गुप्त युग में राजकीय आय के अनेक साधन थे। राजकीय आय को जनता के हित में प्रयोग किया जाता था। आय का एक भाग राजा कर्मचारियों को वेतन के रूप में देता था। सेवा एवं पुलिस विभाग के ऊपर भी पर्याप्त धन व होता था। आकस्मिक आपत्तियों के लिए राज्य रक्षा के लिए धन का एक अंश सुरक्षित रखते थे और उसे आपातकालीन स्थिति में प्रयोग करते थे। सड़कों का निर्माण और उसकी मरम्मत, सिंचाई के साधन की व्यवस्था आदि राज्य की ओर से यथेष्ट मात्रा में की जाती थी। शिक्षा में भी वे राज्य के धन का व्यय करते थे। अनेक मंदिरों का निर्माण भी करते थे। गुप्त सम्राट दीनों व अनाथों की सहायता के लिए समय-समय पर सहायता करते थे। इस प्रकार गुप्त काल में राजकीय आय को अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में व्यय किया जाता था।

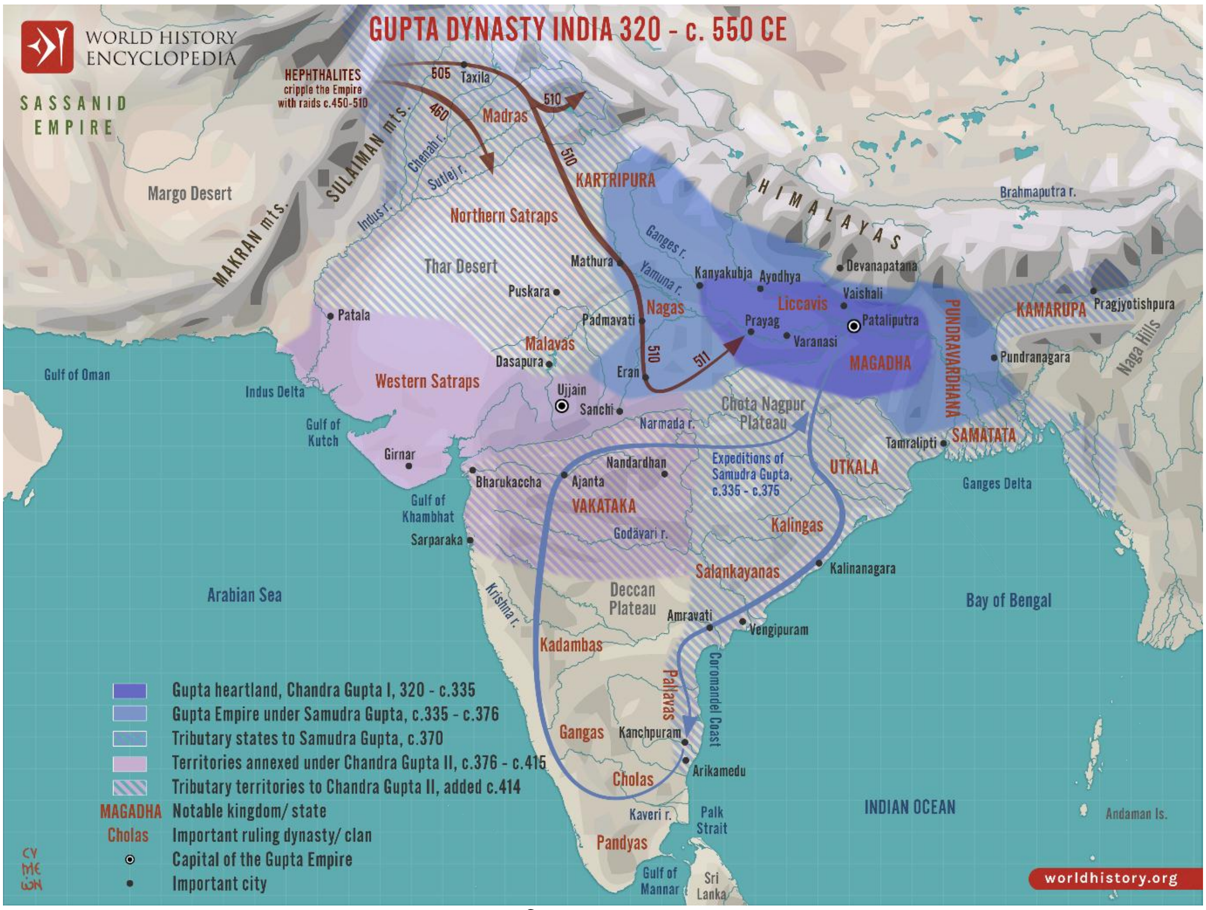

. चित्र :- 4. गुप्त राजवंश

गुप्त युग का सैनिक विभाग भी प्राप्त संगठित था। गुप्त शासक कुशल प्रशासन होने के साथ-साथ महान विजेता भी थे। उनकी सेवा में पैदल गजारोही तथा अश्वरोही सैनिक होते थे। सैनिक का प्रधान अधिकारी महासेनापति होता था। हाथियों के नायक को कटुक तथा घुड़सवारों के नायक को भटाश्वपति कहते थे। युद्ध में विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शास्त्र प्रयोग किए जाते थे। शत्रुओं को अपने से दूर रखने के लिए किले बंदी की जाती थी। इस प्रकार गुप्त काल का सैन्य विभाग व्यवस्थित था। गुप्त युग में न्याय व्यवस्था अतिउत्तम थी। गुप्तकालीन लेखक में दंडनायक महादंड नायक सर्व दंड नायक महा सर्वे दंड नायक आदि न्याय विभाग होते थे ब्राह्मणों में न्याय का कार्य ग्राम पंचायत करती थी न्याय के उपरांत जो कर्मचारी शारीरिक दंड देता था उसे दंडित कहा जाता था इस प्रकार गुप्त कालीन शासन प्रणाली अत्यधिक सुव्यवस्थित थी।गुप्त काल में न केवल समाज धर्म और प्रशासन के क्षेत्र में अपितु साहित्य और कला के क्षेत्र में भी प्रगति की।

गुप्त काल के शासक संस्कृत भाषा साहित्य के प्रेमी थे उनके राजत्व कल में संस्कृत अत्यधिक विकसित हुई। गुप्त शासको का संस्कृत भाषा के प्रति अपार प्रेम था उनके समस्त शिलालेख संस्कृत भाषा में लिखित है। कालिदास गुप्त काल के ही कवि थे। कुंतालेश्वरदोत्यम नमक नाटक में कालिदास ने उल्लेखित किया है कि सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने कुंतल प्रदेश में उन्हें वहां की व्यवस्था देखने के लिए राजदूत बनाकर भेजा थागुप्त काल के एक अन्य प्रसिद्ध नाटककार शूद्रक थे जिन्होंने मृच्छकटिक नामक नाटक की रचना की। गुप्त काल में विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस की रचना की।

मुद्राराक्षस में नंद वंश के विनाश तथा चंद्रगुप्त मौर्य के सिंहासन पर आसीन होने की कथा का वर्णन किया गया है। गुप्त युग का एकमात्र गद्य लेखक सुबंधू था, इसकी कृति का नाम वासवदत्ता था। गुप्तकालीन कवि हरिषेण ने समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति की रचना की। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के उदयगिरि गुहा का अभिलेख वीर सेन द्वारा रचित है। कुमारगुप्त के शासनकाल में वासभट्टि ने मंदसौर प्रशस्ति लिखी। गुप्त काल में अलंकार शास्त्र का विकास हुआ। आचार्य भलाह ने काव्यालंकार नामक ग्रंथ की रचना की। अमर सिंह ने नाम लिंगानुशासन नामक ग्रंथ की रचना की। गुप्त काल का कामंदक का नीति सार प्रसिद्ध ग्रंथ है। वात्स्यायन का कामसूत्र इसी काल में लिखा जाने वाला ग्रन्थ है।

गुप्त काल में दार्शनिक साहित्य का भी बहुत अधिक विकास हुआ। सांख्य दर्शन के क्षेत्र में विंध्यवासी और ईश्वर कृष्णा नामक आचार्य थे। ईश्वर कृष्ण ने सांख्यकारिका नामक ग्रंथ लिखा है। न्याय दर्शन में भी बहुत उन्नति हुई। गुप्त काल के धार्मिक साहित्य में पुराने और स्मृतियों को भी स्थान दिया गया है । गुप्त काल में बौद्ध साहित्य का भी प्राप्त मात्रा में सृजन हुआ। गुप्त काल में जैन साहित्य का भी विकास हुआ।सिद्धसेन दिवाकर एक जैन लेखक थे, जिन्होंने कई रचनाएं लिखी। न्यायावतार इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। इस प्रकार गुप्त काल में ब्राह्मण बौद्ध तथा जैन तीनों धर्म के साहित्य का विकास हुआ ।

प्रमुख बिंदु (Kye Points) :-

- **श्रीगुप्त एवं घटोत्कच:** वंश के संस्थापक, जिन्होंने 'महाराज' की उपाधि धारण की।
- **चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.):** गुप्त संवत का प्रवर्तक और प्रथम 'महाराजाधिराज'। इन्होंने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह कर गुप्त शक्ति को सुदृढ़ किया।
- **समुद्रगुप्त (335-375 ई.):** 'भारत का नेपोलियन' (विन्सेंट स्मिथ के अनुसार)। प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार इन्होंने आर्यावर्त के 9 और दक्षिणापथ के 12 राज्यों पर विजय प्राप्त की।
- **चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (375-415 ई.):** शकों का विनाश कर 'शकारि' कहलाए। इनके दरबार में 'नवरत्न' सुशोभित थे।
- **कुमारगुप्त एवं स्कन्दगुप्त:** कुमारगुप्त ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की, जबकि स्कन्दगुप्त ने हूणों के आक्रमण को विफल किया।

3. गुप्तकालीन प्रशासन (Administration)

गुप्त प्रशासन मौर्यों की तुलना में कम केंद्रीकृत था और इसमें **विकेंद्रीकरण** के तत्व मौजूद थे।

- **केंद्रीय प्रशासन:** राजा शासन का प्रमुख होता था। उसकी सहायता के लिए 'कुमारमात्य' (सर्वोच्च अधिकारी) और 'सन्धिविग्रहिक' (युद्ध एवं शांति का मंत्री) होते थे।
- **प्रांतीय विभाजन:** साम्राज्य को 'भुक्ति' (प्रांत) में विभाजित किया गया था, जिसका प्रशासन 'उपरिक' देखते थे।
- **स्थानीय शासन:** भुक्तियों को 'विषय' (ज़िले) में बाँटा गया था, जिसका प्रमुख 'विषयपति' होता था। नगर के प्रशासन में 'नगर-श्रेष्ठी' और 'सार्थवाह' जैसे व्यापारिक वर्गों की मुख्य भूमिका थी।

4. आर्थिक जीवन (Economic Life)

- **कृषि:** अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार। सिंचाई के लिए 'रहट' (Araghatta) का प्रयोग होता था।
- **व्यापार:** रोम के साथ व्यापार में गिरावट आई, लेकिन दक्षिण-पूर्व एशिया (सुवर्णद्वीप) के साथ व्यापार बढ़ा। 'ताम्रलिप्ति' पूर्वी तट का प्रमुख बंदरगाह था।
- **मुद्रा प्रणाली:** गुप्तों ने सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएं जारी कीं, जिन्हें **'दीनार'** कहा जाता था। चांदी के सिक्के (रुप्यक) चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा शकों पर विजय के बाद प्रचलित किए गए।

5. सांस्कृतिक एवं बौद्धिक उपलब्धि (Cultural Achievements)

यही वह क्षेत्र है जो इस काल को 'स्वर्ण युग' बनाता है:

- **साहित्य:** संस्कृत राजभाषा बनी। कालिदास (अभिज्ञानशाकुंतलम), विशाखदत्त (मुद्राराक्षस), और विष्णु शर्मा (पंचतंत्र) इसी काल की विभूतियाँ थे।
- **विज्ञान और गणित:**
    - **आर्यभट्ट:** शून्य (0) का प्रयोग, दशमलव प्रणाली और पृथ्वी की परिधि की गणना।
    - **वराहमिहिर:** खगोल विज्ञान और ज्योतिष (बृहज्जातक)।
    - **धन्वंतरि:** आयुर्वेद के विशेषज्ञ।

कला और स्थापत्य: मंदिर निर्माण की **'नागर शैली'** का उदय। झांसी का 'देवगढ़ दशावतार मंदिर' पंचायतन शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। अजंता (गुफा संख्या 16, 17, 19) की चित्रकला इसी युग की देन है।

गुप्त कला की तुलनात्मक विशेषताएँ

कला प्रकार	मुख्य केंद्र	विशेषता	उदाहरण
मूर्तिकला	सारनाथ, मथुरा	शांत, आध्यात्मिक, पारदर्शी वस्त्र	खड़ा बुद्ध, वराह अवतार
वास्तुकला	देवगढ़, उदयगिरि	नागर शैली, शिखर	दशावतार मंदिर
चित्रकला	अजंता, बाघ	भावपूर्ण, जीवंत रंग	पद्मपाणि बोधिसत्व

- **मूर्तिकला** — सारनाथ और मथुरा की बुद्ध मूर्तियाँ (शांत, आध्यात्मिक, पारदर्शी वस्त्र)।
- **वास्तुकला** — देवगढ़ का दशावतार मंदिर (नागर शैली का प्रारंभ), उदयगिरि गुफाएँ, भितरगाँव मंदिर।
- **चित्रकला** — अजंता और बाघ गुफाओं की फ्रेस्को पेंटिंग्स विश्व प्रसिद्ध हैं।

6. धार्मिक स्थिति (Religion)

- गुप्त शासक **'परम भागवत'** की उपाधि धारण करते थे और वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।
- इसी काल में हिंदू धर्म के वर्तमान स्वरूप (पुराणों का संकलन, मूर्ति पूजा, भक्ति मार्ग) का विकास हुआ।
- साथ ही, बौद्ध और जैन धर्म को भी संरक्षण प्राप्त था, जो सामाजिक सहिष्णुता का परिचायक है।
- धर्म की दृष्टि से हिंदू धर्म (वैष्णव मत) का पुनरुत्थान हुआ, लेकिन बौद्ध और जैन धर्म को भी पूर्ण संरक्षण मिला। **नालंदा विश्वविद्यालय** की स्थापना कुमारगुप्त-I के काल में हुई, जो बाद में एशिया का प्रमुख शिक्षा केंद्र बना।

7. पतन के कारण (Decline)

- स्कन्दगुप्त के बाद कमजोर उत्तराधिकारी।
- हूणों के निरंतर आक्रमण।
- सामंतों (जैसे यशोधर्मन) की बढ़ती शक्ति और विद्रोह।
- व्यापारिक मार्गों में परिवर्तन के कारण आर्थिक दबाव।

प्रमुख शासक और उनके योगदान

शासक	काल (ई.)	प्रमुख उपलब्धियाँ
चंद्रगुप्त-I	320-335	वंश की नींव, लिच्छवि विवाह
समुद्रगुप्त	335-375	**भारतीय नेपोलियन**, दिग्विजय, अश्वमेध यज्ञ, प्रयाग प्रशस्ति
चंद्रगुप्त-II (विक्रमादित्य)	375-415	शकों को पराजित, नौ रत्न, फाहियान का भारत भ्रमण, उज्जयिनी राजधानी
कुमारगुप्त-I	415-455	नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना
स्कंदगुप्त	455-467	हूण आक्रमण का सफल प्रतिरोध

निष्कर्ष :-

गुप्त काल में वैज्ञानिक प्रगति भी हुई। गुप्त युग में ज्योतिष शास्त्र पर पहला ग्रंथ वैशिष्ठ सिद्धांत लिखा गया। ज्योतिष के क्षेत्र में आर्यभट्ट का महत्वपूर्ण योगदान है ब्रह्मगुप्त की रचना ब्रह्म सिद्धांत भी गुप्त काल की प्रसिद्ध ज्योतिषी रचना है । लाटदेव आर्यभट्ट का प्रमुख शिष्य था। इसने भी ज्योतिष के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्यभट्ट और वराहमिहिर ने ज्योतिष के क्षेत्र में ही नहीं अपितु गणित के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया। वे प्रसिद्ध गणितज्ञ थे। वराह मिहिर की गणना विक्रमादित्य के नवरत्नों के अंतर्गत की जाती है। आर्यभट्ट ने गणित पर अपना आर्यभट्ट नियम नामक ग्रंथ रचा इस ग्रंथ में उन्होंने अंकगणित बीजगणित व रेखा गणित के विभिन्न सिद्धांतों का वर्णन किया है। दशमलव के सिद्धांत का भी वर्णन आर्यभट्ट ने किया। गुप्त काल में आयुर्वेद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। वाग्भट्ट नामक आयुर्वेदाचार्य ने अष्टांगहृदय की रचना की। धन्वन्तरि गुप्तकालीन वैद्य हैं।

कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद भारत में राजनीतिक विकेंद्रीकरण के युग का अंत कर गुप्तों ने एक सुदृढ़ साम्राज्य की स्थापना की। लगभग 319-320 ईस्वी से शुरू होने वाला यह काल न केवल राजनीतिक एकता, बल्कि कला, साहित्य, विज्ञान और स्थापत्य में अभूतपूर्व प्रगति का साक्षी बना, जिसे भारतीय इतिहास का **'स्वर्ण युग' (Golden Age)** कहा जाता है। इस काल में राजनीतिक एकता, सांस्कृतिक उत्कर्ष, वैज्ञानिक प्रगति, साहित्यिक रचना और कलात्मक उत्कृष्टता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। गुप्त काल में अर्थव्यवस्था चरम पर थी। स्वर्ण मुद्राओं (दीनार) का प्रचलन, व्यापार का विकास और कृषि की उन्नति इसके प्रमाण हैं। रोम, चीन, दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य एशिया के साथ व्यापार फल-फूल रहा था। चीनी यात्री फाहियान (३९९-४१४ ई.) ने लिखा है कि गुप्त साम्राज्य में समृद्धि, शांति और न्याय था। शहरों (पाटलिपुत्र, उज्जैन, वाराणसी) में बाजार, कारखाने और सड़कें विकसित थीं। यह आर्थिक समृद्धि कला और साहित्य के विकास का आधार बनी। गुप्त साम्राज्य एक आदर्श साम्राज्य नहीं था। इसमें वर्ण व्यवस्था, दास प्रथा और महिलाओं की स्थिति में कुछ गिरावट भी देखी गई। लेकिन कुल मिलाकर इसकी उपलब्धियाँ कमियों से कहीं अधिक हैं। यह काल भारतीय इतिहास में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का प्रतीक बन गया । गुप्त काल ने प्राचीन भारत को चरम सीमा तक पहुँचाया और बाद के भारतीय सभ्यता के स्वरूप को आकार दिया।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न:-

अति लघु उत्तरीय (2 अंक):

1. प्रयाग प्रशस्ति के लेखक कौन थे?
2. आर्यभट्ट का प्रमुख योगदान लिखिए।

लघु उत्तरीय (5 अंक):

1. समुद्रगुप्त की विजय नीति का वर्णन कीजिए।
2. गुप्त काल को स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है?

दीर्घ उत्तरीय (10/15 अंक):

1. गुप्त प्रशासन की विशेषताओं तथा मौर्य प्रशासन से तुलना कीजिए।
2. गुप्त साम्राज्य के पतन के कारणों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

गुप्त साम्राज्य पर MCQs

1. गुप्त वंश का संस्थापक कौन था?

(A) चंद्रगुप्त I

(B) समुद्रगुप्त

(C) श्रीगुप्त

(D) स्कंदगुप्त

 उत्तर: (C) श्रीगुप्त

2. गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक किसे माना जाता है?

(A) श्रीगुप्त

(B) चंद्रगुप्त I

(C) समुद्रगुप्त

(D) कुमारगुप्त

 उत्तर: (B) चंद्रगुप्त I

3. 'भारत का नेपोलियन' किसे कहा जाता है?

(A) चंद्रगुप्त I

(B) समुद्रगुप्त

(C) स्कंदगुप्त

(D) कुमारगुप्त

 उत्तर: (B) समुद्रगुप्त

4. प्रयाग प्रशस्ति किसने लिखी थी?

(A) कालिदास

(B) हरिषेण

(C) विष्णु शर्मा

(D) बाणभट्ट

 उत्तर: (B) हरिषेण

5. प्रयाग प्रशस्ति किस शासक से संबंधित है?

(A) चंद्रगुप्त I

(B) समुद्रगुप्त

(C) स्कंदगुप्त

(D) कुमारगुप्त

 उत्तर: (B) समुद्रगुप्त

6. गुप्त काल का प्रसिद्ध कवि कौन था?

(A) बाणभट्ट

(B) कालिदास

(C) दंडी

(D) भवभूति

 उत्तर: (B) कालिदास

7. 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' के रचयिता कौन हैं?

(A) कालिदास

(B) बाणभट्ट

(C) भवभूति

(D) दंडी

 उत्तर: (A) कालिदास

8. फाह्यान किस शासक के समय भारत आया था?

(A) चंद्रगुप्त I

(B) समुद्रगुप्त

(C) चंद्रगुप्त II

(D) स्कंदगुप्त

 उत्तर: (C) चंद्रगुप्त II

9. चंद्रगुप्त II को किस नाम से भी जाना जाता है?

(A) विक्रमादित्य

(B) अशोक

(C) धर्मराज

(D) परमेश्वर

 उत्तर: (A) विक्रमादित्य

10. गुप्त काल की राजधानी क्या थी?

(A) पाटलिपुत्र

(B) उज्जैन

(C) कन्नौज

(D) तक्षशिला

 उत्तर: (A) पाटलिपुत्र

11. गुप्त काल को किसका 'स्वर्ण युग' कहा जाता है?

(A) कला और साहित्य

(B) कृषि

(C) उद्योग

(D) व्यापार

 उत्तर: (A) कला और साहित्य

12. 'नालंदा विश्वविद्यालय' का विकास किस काल में हुआ?

(A) मौर्य काल

(B) गुप्त काल

(C) हर्षकाल

(D) दिल्ली सल्तनत

 उत्तर: (B) गुप्त काल

13. आर्यभट्ट किस क्षेत्र से संबंधित थे?

(A) गणित और खगोलशास्त्र

(B) चिकित्सा

(C) साहित्य

(D) राजनीति

 उत्तर: (A) गणित और खगोलशास्त्र

14. 'आर्यभटीय' के लेखक कौन हैं?

(A) वराहमिहिर

(B) आर्यभट्ट

(C) ब्रह्मगुप्त

(D) भास्कराचार्य

 उत्तर: (B) आर्यभट्ट

15. दशमलव पद्धति का विकास किस काल में हुआ?

(A) मौर्य काल

(B) गुप्त काल
(C) हर्षकाल
(D) मुगल काल
 उत्तर: (B) गुप्त काल

16. गुप्तकालीन प्रशासन की प्रमुख इकाई क्या थी?
(A) ग्राम
(B) जनपद
(C) प्रांत
(D) नगर
 उत्तर: (C) प्रांत

17. 'उपरिक' क्या था?
(A) कर अधिकारी
(B) प्रांतीय शासक
(C) सैनिक अधिकारी
(D) न्यायाधीश
 उत्तर: (B) प्रांतीय शासक

18. स्कंदगुप्त का प्रमुख शत्रु कौन था?
(A) यूनानी
(B) शक
(C) हूण
(D) मंगोल
 उत्तर: (C) हूण

19. हूणों को किसने पराजित किया?
(A) समुद्रगुप्त
(B) चंद्रगुप्त II
(C) स्कंदगुप्त
(D) कुमारगुप्त
 उत्तर: (C) स्कंदगुप्त

20. गुप्त काल में भूमि कर को क्या कहा जाता था?

(A) भाग

(B) भोग

(C) कर

(D) शुल्क

 उत्तर: (A) भाग

21. गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्रा को क्या कहा जाता था?

(A) दीनार

(B) रुपया

(C) टंका

(D) मोहुर

 उत्तर: (A) दीनार

22. गुप्त काल में धर्म की प्रमुख धारा क्या थी?

(A) बौद्ध धर्म

(B) जैन धर्म

(C) वैष्णव धर्म

(D) इस्लाम

 उत्तर: (C) वैष्णव धर्म

23. गुप्तकालीन समाज की विशेषता क्या थी?

(A) कठोर वर्ण व्यवस्था

(B) समानता

(C) दास प्रथा का अभाव

(D) लोकतंत्र

 उत्तर: (A) कठोर वर्ण व्यवस्था

24. 'मेघदूत' के रचयिता कौन हैं?

(A) कालिदास

(B) भवभूति

(C) दंडी

(D) बाणभट्ट

 उत्तर: (A) कालिदास

25. गुप्त साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण क्या था?

(A) आंतरिक विद्रोह

(B) आर्थिक संकट

(C) हूण आक्रमण

(D) उपरोक्त सभी

 उत्तर: (D) उपरोक्त सभ

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography) :-

1. **आर. सी. मजूमदार**
   – *प्राचीन भारत* (Ancient India)
2. रोमिला थापर
   – *प्रारंभिक भारत का इतिहास* (History of Early India)
3. डी. एन. झा
   – *प्राचीन भारत: एक ऐतिहासिक रूपरेखा* (Ancient India: In Historical Outline)
4. उपिंदर सिंह
   – *प्राचीन एवं प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का इतिहास*
5. ए. एल. बाशम
   – *अद्भुत भारत* (The Wonder That Was India)
6. के. ए. नीलकंठ शास्त्री
   – *दक्षिण भारत का इतिहास*
7. रामशरण शर्मा
   – *प्राचीन भारत / भारत का प्राचीन इतिहास*
8. हर्बंस मुखिया
   – *भारतीय इतिहास की व्याख्या* (Interpretations of Indian History)
9. बिपिन चंद्र
   – *भारत का इतिहास*
10. सतीश चंद्र
    – *मध्यकालीन भारत* (इतिहासलेखन की समझ हेतु सहायक)
11. **मजूमदार, आर.सी.**
    - *प्राचीन भारत*. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

12. **रायचौधरी, एच.सी.**

- *प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास*. किताब महल, इलाहाबाद।

13. **झा, डी.एन. एवं श्रीमाली, के.एम.**

- *प्राचीन भारत का इतिहास*. हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

14. **पाठ्यक्रम:** *प्राचीन इतिहास*, *संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग*, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर (उ.प्र.)।